11. 17 hrs

FELICITATIONS TO THE SPEAKER

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, इस सदन के सभी सदस्यों के लिए यह अत्यंत हर्ष और गर्व का समय है, आपको इस पद पर आसीन होते हुए देखने का। इस सदन में पुराने सभी सदस्य आपसे भली भांति परिचित हैं। विधायक के रूप में भी राजस्थान में आपने जो सक्रिय भूमिका अदा की है, उससे भी राजनीतिक जीवन से जुड़े हुए लोग परिचित हैं। हम सबके लिए गर्व का विषय है कि स्पीकर पद पर आज एक ऐसे व्यक्तित्व का हम अनुमोदन कर रहे हैं, सर्वसम्मति से उनको स्वीकृति दे रहे हैं जो सार्वजनिक जीवन में विद्यार्थी काल से, छात्र संगठनों से जुड़ते हुए, यूनिवर्सिटी की छात्र गतिविधि का नेतृत्व करते हुए जीवन का सर्वाधिक उत्तम समय किसी भी प्रकार के ब्रेक के बिना अखंड अविरत समाज जीवन की किसी न किसी गतिविधि से जुड़ा रहा। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में भी, छात्र आंदोलन से निकलकर युवा मोर्चा के संगठन में करीब 15 साल तक आपने जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर काम किया। मुझे सालों तक संगठन का कार्य करने का अवसर मिला है, उसके कारण मेरे एक साथी के रूप में भी हम दोनों को साथ में काम करने का अवसर मिला।

कोटा वह धरती है जो एक प्रकार से आजकल शिक्षा का काशी बन गया है। जिनके भी दिल-दिमाग में कैरियर की प्राथमिकता है, वह कोटा को पसंद करता है, कोटा में रहेगा, कोटा में पढ़ेगा और कोटा से अपनी जिंदगी बनाता है। राजस्थान के एक कोने का एक छोटा-सा शहर आज एक प्रकार से लघु भारत बन गया है। कोटा का यह परिवर्तन जिस नेतृत्व के सामने हुआ है, जिसके योगदान से हुआ है, जिसके इनिशिएटिव से हुआ है, वह नाम है श्रीमान ओम बिरला जी। आमतौर पर राजनीतिक जीवन में हम लोगों की एक छवि बनी रहती है कि हम 24 घंटे राजनीति करते हैं, उठा-पटक करते हैं, तू-तू, मैं-मैं करते हैं, कौन हारे, कौन जीते, इसी में लगे रहते हैं, लेकिन उसके अलावा एक सच्चाई होती है जो कभी-कभी उजागर नहीं होती है।

वर्तमान में देश ने अनुभव किया है कि राजनीतिक जीवन में जितना अधिक मात्रा में सामाजिक सेवा का प्रपोर्शन रहता है, समाज में स्वीकृति ज्यादा मिलती है। हार्डकोर पॉलिटिक्स का जमाना करीब-करीब चला जा रहा है। ओम बिरला जी वह शख्सियत हैं, जनप्रतिनिधि के नाते राजनीति से जुड़ना बड़ा स्वाभाविक था, लेकिन उनकी पूरी कार्य शैली समाज सेवा पर केन्द्रित रही है। समाज में जीवन की कहीं पर भी पीड़ा अगर उनको नजर आई, तो वे पहले पहुंचने वाले व्यक्तियों में से रहे।

मुझे बराबर याद है, जब गुजरात में भयंकर भूकम्प आया, बहुत लम्बे अरसे तक वे कच्छ में रहे। अपने इलाके के युवा साथियों को लेकर आए। स्थानीय कोई व्यवस्था का उपयोग न करते हुए, अपनी व्यवस्थाओं को, जो भी उपलब्ध थीं, उसके आधार पर उन्होंने लम्बे अरसे तक सेवा का काम किया। जब केदारनाथ का हादसा हुआ, तो वे फिर उत्तराखण्ड में नजर आए। वहां भी अपनी टोली लेकर समाज सेवा के काम में लग गए। कोटा में भी अगर किसी के पास ठण्ड के सीजन में कम्बल नहीं है, तो रातभर कोटा की गलियों में निकलना, जन-भागीदारी से गर्म कम्बल वगैरह इकट्ठा करना और उनको पहुंचाना। उन्होंने एक व्रत लिया था। सार्वजनिक जीवन में हम सभी सांसदों के लिए कभी-कभी वह प्रेरणा देता है। उनका व्रत था कि कोटा में कोई भूखा नहीं सोएगा। वे एक 'प्रसादम्' नाम की योजना चलाते थे। उस 'प्रसादम्' योजना के तहत जन-भागीदारी से भूखे लोगों को ढूंढ़-ढूंढ़कर उनको खाना खिलाना, यह उनका रेग्युलर काम बन गया। उसी प्रकार से जो गरीब हैं, दु:खी हैं, उनके पास अगर पूरे कपड़े नहीं हैं, तो उनके लिए उन्होंने 'परिधान' योजना बनाई। उस 'परिधान' मूवमेंट के आधार पर वे जन-भागीदारी से सामाजिक संवेदना से लगातार जुड़े रहकर, अगर किसी के पास जूते नहीं हैं, तो जन-भागीदारी से जूते इकट्ठा करना, गर्मी के सीजन में उसको जूते पहना देना। अगर कोई बीमार है, कहीं रक्तदान का काम जरूरी है, कहीं अस्पताल में और सेवाएं देनी हैं, एक प्रकार से उन्होंने अपनी राजनीति का केन्द्रबिंदु जन-आंदोलन से ज्यादा जनसेवा को बनाया। ऐसे एक संवेदनशील व्यक्ति आज जब स्पीकर पद पर हम सबको अनुशासित करेंगे, वहीं हमें अनुप्रेरित भी करेंगे और उसके द्वारा यह सदन देश को उत्तम से उत्तम

दे पाए, एक कैटलिटिक एजेंट के रूप में, एक पदासीन की जिम्मेदारी के रूप में और सालों की सामाजिक संवेदना वाली जिंदगी जीने के कारण, मुझे विश्वास है कि उत्तम तरीके से इन चीजों को कर पाएंगे।

सदन में भी हमने देखा है कि वे मुस्कराते हैं तो भी बड़े हल्के से मुस्कराते हैं, वे बोलते हैं तो भी बड़े हल्के से बोलते हैं। इसलिए सदन में, मुझे कभी-कभी डर लगता है कि उनकी जो नम्रता है, विवेक है, कहीं कोई उसका दुरुपयोग न कर दे। पहले तो ऐसा होता था कि शायद लोकसभा के स्पीकर को कठिनाइयां ज्यादा रहती थीं, राज्यसभा के चेयरमैन को कम रहती थीं, लेकिन अब उल्टा हो गया है। हम जब पिछले सत्र को याद करेंगे, तो हर किसी के मुंह से यह तो निकलेगा कि हमारी जो स्पीकर महोदया थीं, हमेशा हंसते रहना, खुश-खुशहाल रहना। डांटना भी है तो डांटने के बाद हंस पड़ना, लेकिन उन्होंने उत्तम तरीके से नई परंपरा को विकसित किया। अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन की तरफ से, ट्रेजरी बैंच की तरफ से, शासन में बैठे हुए सब जिम्मेदार मंत्रिपरिषद की तरफ से आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपके काम को सरल करने में जो भी भूमिका हमारे जिम्मे होगी, उसे शत प्रतिशत पूर्ण करने का प्रयास करेंगे और आपका हक बना रहेगा कि इस बैंच की तरफ भी अगर नियमों का उल्लंघन होता है, व्यवस्थाओं में बाधाएं पैदा की जाती हैं तो आपका पूरा हक बनेगा कि हमें भी और हमारी तरफ के लोगों को भी आप उतनी ही दृढ़ता से, आग्रह से कहें, हम उसका स्वागत करेंगे, क्योंकि सदन की गरिमा बनाने में हम सबका योगदान रहना आवश्यक है।

मुझे विश्वास है, पहले तो तीन-चार साल अच्छे जाते थे, चुनाव के वर्ष में थोड़ी गड़बड़ होती थी, लेकिन अब हर तीन-चार महीने के बाद चुनाव दिखता है तो लगता है कि यहीं से कुछ मैसेज देंगे। ऐसी स्थिति में आपको भी तनाव ज़रा ज्यादा रहने वाला है, लेकिन फिर भी अच्छी चर्चा हो, उत्तम चर्चा हो, सब विषयों पर चर्चा हो, मिलजुलकर निर्णय हो, उसमें आपको पूरी तरह यह सदन भी योगदान करेगा, ऐसी एक आशा के साथ मेरी तरफ से, सदन की तरफ से, ट्रेजरी बैंच की तरफ से आपको बहुत शुभकामनाएं हैं। धन्यवाद।